

Chapter 4

Question: Why do we hate the poor?	प्रश्न : हम गरीबों से घृणा क्यों करते हैं?
Krishnamurti: Do you hate the poor? Do you hate the poor woman who is carrying the heavy basket on her head, walking all the way from Saraimohana to Banaras? Do you hate her with her torn clothes, dirty? Or, do you feel a sense of shame that you are well clothed, clean, well-fed, when you see another with almost nothing and working day in and day out, year after year? Which is it that you feel? An inward sensation, a sense of, 'I have got everything, that woman has nothing,' or, a feeling of hatred for the other? Perhaps we are using the wrong word hate. It may be really that you are ashamed of yourself, and being ashamed, you push away that which disturbs you.	कृष्णमूर्ति : क्या आप गरीबों से घृणा करते हैं? सरायमोहाना से बनारस के पूरे रास्ते भर सिर पर भारी टोकरी ढोकर ले जाती हुई उस गरीब स्त्री से आप घृणा करते हैं? क्या आप उससे और उसके फटे-पुराने मैले वस्त्रों से घृणा करते हैं? या आप इस बात के लिए शर्मिंदगी की भावना महसूस करते हैं कि आप अच्छे कपड़े पहनते हैं, साफ-सुथरे हैं, भरपेट खाना खाते हैं जबकि दूसरे लोगों को आप अत्यंत गरीब और दिन-रात, वर्ष-प्रतिवर्ष मेहनत करता हुआ देखते हैं? आपमें सच में कौन सी भावना जाग्रत होती है? अंतर्मन में यह संवेदनशीलता, यह भावना, 'मेरे पास सब कुछ है जबकि उस स्त्री के पास कुछ भी नहीं है' उठती है या उससे घृणा का भाव उठता है? शायद यहां पर हम घृणा शब्द का प्रयोग भूलवश कर रहे हैं। शायद ऐसा होता होगा कि आप अपने आप से शर्मिंदा अनुभव करते हों और शर्म अनुभव करने के कारण आप उस चीज़ से भागने का प्रयास करने लगते हैं, जो आपको विचलित कर रही होती है।
Question: Is there any difference between cleverness and intelligence?	प्रश्न : क्या चतुराई और समझदारी में कोई भेद है?
Krishnamurti: Don't you think that there is a vast difference? You might be very clever in your particular subject, be able to pass in it, argue out, argue with another boy. But you might be afraid—afraid of what your father may say, what your neighbour, your sister, or somebody else says. You may be very clever and yet have fear and if you have fear, you have no intelligence. Your cleverness is not really intelligence. Most of us who are in schools become more and more clever and cunning as we grow older because that is how we are trained, to outdo somebody else in business or in the black market, to be so ambitious that we get ahead of others, push others	कृष्णमूर्ति : क्या आपको यह नहीं लगता कि इन दोनों के बीच व्यापक अंतर है? यह संभव है कि आप अपने विशिष्ट विषय में दक्ष हों, उसमें उत्तीर्ण होने की क्षमता आपमें हो, आप उस पर बहस कर जीत सकते हों, दूसरे किसी लड़के से तर्क कर सकते हों। लेकिन हो सकता कि आप डरे हुए हों?—आपको यह भय सताता हो कि आपके पिता क्या कहेंगे, आपके पड़ोसी, आपकी बहन, या कोई अन्य व्यक्ति आपके बारे में क्या कहता है। हो सकता है आप बहुत चतुर हों पर भयभीत रहते हों और भय का अर्थ है प्रज्ञा का अभाव। आपकी चतुराई वास्तव में समझदारी नहीं है। विद्यालय में पढ़ने वाले, हममें से अधिकांश जैसे-जैसे बड़े होते हैं वैसे-वैसे और भी अधिक चतुर, और भी अधिक चालाक होने लगते हैं क्योंकि हमें उसी प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि हम व्यापार, व्यवसाय में या कालाबाजारी करने में दूसरों से आगे निकल जाएं, हमें महत्वाकांक्षा से इतना भर दिया जाता है कि हमें

Chapter 4

aside. But intelligence is something quite different. It is a state in which your whole being, your whole mind and your emotions are integrated, are one. This integrated human being is an intelligent human being, not merely a clever person.	कैसे भी दूसरों से आगे निकलनौ??, दूसरों को पीछे धकेलना चाहते हैं। परंतु प्रज्ञा इससे बिल्कुल भिन्न बात है। यह ऐसी अवस्था है जिसमें आपका संपूर्ण अस्तित्व, आपका समूचा मन और आपकी भावनाएं समेकित होती हैं, समवेत होती हैं, एक होती हैं। इस प्रकार का समेकित मानव प्रज्ञाशील होता है, वह केवल एक चतुर व्यक्ति नहीं होता।
Question: Does love depend on beauty and attraction?	प्रश्न : क्या प्रेम सौंदर्य एवं आकर्षण पर निर्भर होता है?
Krishnamurti: Perhaps. You know it is very easy to ask questions, but it is very difficult to think out the problems that those questions involve. To really think them out, not wait for an answer from me, to really think out step by step what is involved, to go into it, is much more important than to wait for an answer from me. These questions indicate, do they not, that we are used to being told what to think, what to do, and not how to think or do anything. We have not thought out these problems, we do not know how to think.	कृष्णमूर्ति : शायद। आप जानते हैं प्रश्न पूछना बहुत आसान है, लेकिन उन प्रश्नों से जुड़ी समस्याओं पर विचार करना अत्यंत कठिन होता है। उन पर चिंतन करना, मुझसे उत्तर की प्रतीक्षा न करते हुए सचमुच उससे जुड़ी विभिन्न बातों पर क्रमपूर्वक विचार करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इन प्रश्नों से क्या यही प्रकट नहीं होता कि हमें जो कुछ सोचने को कहा जाता है, जो कुछ करने के लिए कहा जाता है हम उसी को सोचने के, उसी को करने के आदी हो चुके हैं, और स्वयं कैसे सोचें या कैसे करें इस ओर हमारा ध्यान ही नहीं है। इन बातों पर हमने विचार ही नहीं किया है, हमें यही नहीं पता कि सोच-विचार किस प्रकार किया जाता है।
While we are young, it is important to know how to think, not just repeat some professor's book; we have to find out for ourselves the truth, the meaning, the implications of any problem. That is why it is very important, while we are here in the school, that all these things, all these problems, should be talked over, discussed, so that our minds do not remain small, petty, trivial.	जब हम छोटे होते हैं तभी से यह जान लेना आवश्यक है कि विचार कैसे किया जाता है, किसी प्रोफेसर या विद्वान के ग्रंथों के उद्धरण देते रहने के बजाए अपने आप से ही किसी भी समस्या के मर्म को, तात्पर्य को और उसमें निहित बातों को समझ लेना। इसीलिए यह ज़रूरी है कि जब हम इस विद्यालय में हैं तभी इन सभी बातों पर, इन सारी समस्याओं पर चर्चा की जाए, बातचीत की जाए ताकि हमारे मन-मस्तिष्क क्षुद्र, संकुचित और उथले ही न रह जाएं।
Question: How can we remove the sense of anxiety?	प्रश्न : घबराहट की भावना को हम अपने मन से कैसे हटाएं?
Krishnamurti: If you had no examinations, would you have the	कृष्णमूर्ति : यदि परीक्षाएं न ली जातीं तो क्या उनके लिए आपके मन में घबराहट होती? इस पर शांतिपूर्वक

anxiety with regard to them? Think it out quietly and you will see. Suppose we are going out on a walk, and we are talking about this problem. Would you have any sense of anxiety if, in a couple of months, you had an examination? Would you have anxiety if, at the end of your examination, B.A. or whatever it is, you had to fight for a job? Would you? You are anxious because you have to have a job. In a society where there is keen competition, where everybody is seeking, fighting, you as a student are being trained from childhood in an atmosphere of anxiety, are you not? You have the first form to pass, then the second form to pass, and so on and on. So, you become a part of the whole social structure, don't you? That is not what we are going to do in this school. We are going to create an atmosphere in which you are not anxious, in which you have no examinations, in which you are not compared with somebody else—even if it involves the breaking of the school. Because, you are important as a human being. If there were such an atmosphere, then examinations would not be all-important, you could study freely, nor would it be difficult for you to pass the university examinations because if you had been intelligent during all the years you spent in school and college, you would be able to work hard for four or five months before the examination, and pass. After passing the final examination, when you go out into the world, you will want a job. But the job you take won't frighten you; your parents, your society won't frighten you; you will do something, even beg; you will not be anxious.

विचार कीजिए और आप यह समझ जाएंगे। मान लीजिए कि हम भ्रमण करने के लिए जा रहे हैं और इस समस्या पर चर्चा करते हैं। यदि अगले दो माह में आपकी परीक्षा होने वाली हो तो क्या आप व्याकुल अनुभव करेंगे? यदि आपकी बी. ए. या किसी अन्य परीक्षा के हो जाने के पश्चात आपको किसी नौकरी को पाने के लिए संघर्ष करना पड़े तो क्या आपमें घबराहट पैदा होगी? क्या आप व्यग्र हो उठेंगे? आपकी घबराहट का कारण है कि आपको कोई नौकरी ढूंढ़नी है। एक ऐसे समाज में जहां प्रतिस्पर्धा करना कठिन है, जहां प्रत्येक व्यक्ति संघर्षरत है, प्रयासरत है, एक छात्र के रूप में बचपन से ही आप घबराहट से भरे वातावरण में प्रशिक्षित किए जाते हैं, हैं न? आपको पहले प्रथम कक्षा उत्तीर्ण करनी होती है फिर दूसरी कक्षा और इसी प्रकार आगे भी चलता रहता है। इस प्रकार आप पूरी सामाजिक संरचना का एक हिस्सा बन जाते हैं, कि नहीं बनते हैं? इस तरह की कोई बात हम इस विद्यालय में नहीं करने जा रहे हैं। यहां हम ऐसा वातावरण निर्मित करने जा रहे हैं जिसमें आपके लिए घबराहट का कोई कारण न हो, जिसमें आपको परीक्षाएं न देनी पड़ें, जिसमें आपकी किसी अन्य से तुलना नहीं की जाए—भले ही इस सब की वजह से हमें विद्यालय बंद भी क्यों न करना पड़े। क्योंकि आप मनुष्य होने के नाते महत्त्वपूर्ण हैं। यदि इस तरह का वातावरण निर्मित किया जा सके तो परीक्षाओं का जुरा भी महत्त्व नहीं रह जाएगा। आप स्वतंत्रता से लिख-पढ़ सकेंगे और तब आपके लिए विश्वविद्यालय द्वारा ली जाने वाली परीक्षाएं पास करना भी कठिन नहीं होगा क्योंकि यदि इन सारे वर्षों के दौरान विद्यालय और कॉलेज में अध्ययन करते समय आप प्रज्ञापूर्ण रहे हों तो चार-पांच महीने कठिन परिश्रम कर आप विश्वविद्यालय की किसी भी परीक्षा को पास कर लेंगे। अंतिम परीक्षा पास करने के बाद जब आप सांसारिक जीवन में प्रवेश करेंगे तो आप कोई रोजगार पाना चाहेंगे। लेकिन तब आप जो भी काम करेंगे उससे आपको भय नहीं लगेगा, आपके अभिभावक, आपका समाज आपको डरा नहीं सकेगा, आप कुछ-न-कुछ अवश्य कर लेंगे, शायद भीख ही मांग लेंगे, पर घबराएंगे नहीं।

Chapter 4

<p>At present, your life is full of anxiety because from the very beginning of your childhood you have been caught in this framework of competition. All of us want success, and we are constantly told, 'Look at that man, he has made a great success.' But as long as you are seeking success, there must be anxiety. But if you are doing something because you love to do it and not because you want to be successful, then there is no anxiety. As long as you want success, as long as you want to climb the social ladder, there is anxiety. But if you are doing what you love to do—it does not matter whether it is merely mending a wheel or putting a cog together or painting or being an administrator—and not because you want position or success, then there is no anxiety.</p>	<p>फिलहाल आपका जीवन घबराहट से भरा है क्योंकि बचपन की शुरुआत से ही आप प्रतिद्वंद्विता के जाल में फंस गए हैं। हम सभी सफलता पाना चाहते हैं, और हमसे लगातार कहा जाता है, “उस व्यक्ति को देखो, उसने बहुत बड़ी सफलता पाई है”। परंतु जब तक आप सफलता के लिए प्रयत्नरत हैं तब तक घबराहट, व्याकुलता तो रहेगी ही। लेकिन यदि आप कोई कार्य इसलिए करना चाहते हैं कि आपको कार्य करने से प्रेम है, इसलिए नहीं कि आप सफल होना चाहते हैं तो व्याकुलता नहीं होगी। जब तक आप सफलता पाने की चाह रखते हैं, जब तक आप सामाजिक प्रतिष्ठा रूपी सीढ़ी पर चढ़ना चाहते हैं तब तक घबराहट तो रहेगी ही। जबकि आप वह कार्य कर रहे हैं जिससे आपको प्रेम है--भले ही वह एक पहिए??पहिये को सुधारना भर हो या छोटी-मोटी कारीगरी हो, या चित्रकारी अथवा प्रशासक का कार्य हो--और आप उसे इसलिए नहीं कर रहे हैं क्योंकि आपको उससे पद-प्रतिष्ठा या सफलता मिल रही है--तो घबराहट बिलकुल नहीं होगी।</p>
--	---